रा0 उत्क्रमित म0 वि0 लखौरा, प0 चम्पारण

केस स्टडी

विद्यालय का नामः रा0 उत्क्रमित मध्य विद्यालय लखौरा

प्रखंडः चनपटिया

जिलाः प0 चम्पारण

विद्यालय में नामांकित बच्चों की संख्याः 462

कार्यरत शिक्षकों की संख्याः 11

विद्यालय में उपलब्ध कमरों को संख्याः 03

विद्यालय के प्रधानाध्यापकः गोविन्द झा

1. विद्यालय में योगदान करने के समय विद्यालय की स्थिति का एक अवलोकन

प0 चम्पारण जिले के चनपटिया प्रखंड मुख्यालय से 8 किलोमीटर की दूरी पर अवस्थित एक गॉव है लखौरा जहॉ स्थित है रा0 उत्क्रमित मध्य विद्यालय लखौरा। कहने को तो लखौरा गॉव समाज के दबंग समुदाय की आबादी वाला गॉव है परंतु यहॉ अवस्थित सरकारी संस्थानों के प्रति उनका नजरिया प्रकट नहीं हो पा रहा था। माह जुलाई 2017 में मेरा पदस्थापन इस विद्यालय में प्रधानाध्यापक के रूप में हुआ। वर्ष 2006 में प्राथमिक विद्यालय लखौरा को मध्य विद्यालय में उत्क्रमित किया गया था तब से लेकर 2017 तक मैं उस विद्यालय में पदस्थापित होने वाला पहला पूर्णकालिक प्रधानाध्यापक था। संभवतः विद्यालय मेरे पदस्थापन की बाट ही जोह रहा था। प्रखंड में योगदान करने के बाद जब मै विद्यालय पहुॅचा तब विद्यालय की तात्कालिन स्थिति देखकर मुझे लगा कि यहॉ बहुत कुछ करने की आवश्यकता है, लेकिन मुझे यह समझ नहीं आ रहा था कि मैं कहॉ से आरंभ करूॅ। लगभग एक सप्ताह तक मैंने केवल विद्यालय में हो रहे दैनिक क्रियाकलापों का अवलोकन किया। मैं पाया कि विद्यालय में पदस्थापित कुछ शिक्षक विद्यालयीय व्यवस्था के प्रति विल्कुल उत्साहित नहीं थे तथा वे यथास्थिति वादी थे। विद्यालय परिसर में गंदगी यत्र तत्र बिखरा रहता था सुबह के सत्र में साफ–सफाई तो जरूर होती थी परंतु उसकी कोई स्थाई व्यवस्था नहीं थी। विद्यालय चाहारदीवरी विहिन था तथा मंदिर

के प्रांगण से लगा था। आस्था से जुड़ा रहने के कारण अन्य विद्यालयों की तुलना में सफाई के प्रति ग्रामीण कुछ ज्यादा ही चिंतिंत रहते थे परंतु उनकी यह चिन्ता विद्या के मंदिर के प्रति न होकर मंदिर के प्रति ज्यादा होती थी। विद्यालय परिसर में मवेशियों एवं मवालियों का जमघट लगा रहता था। विद्यालय में खाली पड़े कुछ हिस्से में काफी झाड़िया एवं घास दिख रहा था जो मुझे संभवतः मुॅह चिढ़ा रहे थे। विद्यालय के चेतना सत्र में उन गतिविधियों का अभाव दिखा जो बच्चों को सीखने के प्रति उत्साहित करते। चेतना सत्र के नाम पर केवल प्रार्थना का बिना किसी स्वर के वाचन होता था। विद्यालय में आने वाले बच्चों को गणवेश की राशि तो मिली थी परंतु वे गणवेश में आते नहीं थे और न हीं कोई शिक्षक इसके प्रति उन्हें उत्प्रेरित कर पा रहे थे। कक्षा में बच्चों की उपस्थिति भी अनियमित दिख रही थी तथा छात्र अपनी इच्छा से विद्यालय आ जा रहे थे। विद्यालय संचालन के समय में भी विभागीय नियम की जगह शिक्षकों की इच्छा ही नजर आ रही थी। विद्यालय में समय सारणी तो उपलब्ध थी परंतु उसके अनुपालन के प्रति कोई शिक्षक प्रतिबद्ध नहीं दिख रहे थे। कक्षा में पठन–पाठन में मुझे विभाग एवं बच्चों से ज्यादा शिक्षकों की मर्जी ही दिख रही थी। गतिविधि आधारित शिक्षा एवं शिक्षण अधिगम सामग्री का कक्षा में प्रयोग के प्रति शिक्षक उपहास का भाव रखते थे। मध्यांतर के बाद विद्यालय में बच्चों का ठहराव हो इसके प्रति न तो बच्चे उत्सुक थे और न ही शिक्षक। विद्यालय का भौतिक परिवेश भी इस तरह का दिख रहा था कि जैसे वर्षों से इसकी रंग–रंगाई न हुई हो। विद्यालय में शौचालय की स्वच्छता के प्रति कोई योजना नहीं दिखी। शिक्षक जिस शौचालय का इस्तेमाल करते थे उसमें बच्चों का प्रवेश वर्जित था तथा वो कुछ साफ दिख रहा था। अर्थात विद्यालय में मुझे विपरित परिस्थितियॉ ही दिख रही थी जो मेरे नये पदस्थापित पद के प्रति कार्य करने की उत्पन्न लालसा को तोड़ने के लिए काफी था। परंतु किसी ने सही कहॉ है कि जब आप कुछ करने की इच्छा रखते हैं तथा उसे पूरा करने का प्रण तो रास्ता खुद तैयार हो जाता है। आगे मैं आपको यह बताउॅगा कि कैसे मैंने अपने लिए संकल्प कि 'मेरा विद्यालय परिसर स्वच्छ होगा', वर्ग विनियमन की प्रक्रिया में बदलाव होगा, बच्चों में अनुशासन में होंगे, विद्यालय के अनुकूल बच्चों का व्यवहार होगा, बच्चें गणवेश में ही विद्यालय आयेंगे, शिक्षक एवं

बच्चे समयनिष्ठ होंगे, विभागीय दिशा–निदेश के अनुरूप चेतना सत्र का आयोजन होगा' को पूरा किया तथा विद्यालय में परिवर्तन का एक सफल प्रयास किया।

2. **तात्कालिक स्थिति में बदलाव हेतु किये गये प्रयासों की झलक**

दुष्यंत कुमार जी की एक पंक्ति मैं हमेशा याद रखता हूँ, 'कौन कहता है कि आसमॉ में सुराख नहीं सकता, बस एक पत्थर तो तबीयत से उछालों यारों'। उनकी लिखि ये पंक्तियॉ हमेशा मेरे अंदर एक कुछ कर गुजरने का भाव भरती हैं। विद्यालय की तात्कालिक स्थिति में बदलाव हेतु सबसे पहले मैंने अपने विद्यालय के शिक्षकों को विश्वास में लिया। विद्यालय में कार्यरत सभी शिक्षक–शिक्षिकाओं के साथ विद्यालय के वर्तमान स्थिति पर चर्चा की तथा उसमें आवश्यक सुधार हेतु उनका विचार जाना। विद्यालय की शैक्षिक व्यवस्था में सुधार, बच्चों के पठन–पाठन एवं आवश्यकतानुसार तथा शिक्षकों की उपलब्धता को ध्यान रखते हुए समय सारणी का निर्माण, विद्यालय परिसर की साफ–सफाई, शिक्षण अधिगम सामग्री का उपयोग एवं गतिविधि आधारित शिक्षण का प्रयोग इत्यादि पर चर्चा कर उनसे सहयोग की अपेक्षा की। विद्यालय में उक्त में बदलाव हेतु सभी शिक्षकों ने पूर्ण सहयोग का आश्वासन दिया। चेतना सत्र को प्रभावी बनाने हेतु मैंने पूर्व से गठित बाल संसद के सदस्यों के साथ संवाद कर गतिविधियॉ तय की तथा प्रतिदिन प्रार्थना, अभियान गीत, राष्ट्रगान, सामाचार वाचन, सामान्य ज्ञान, प्रेरक प्रसंग का वाचन जैसी गतिविधि सुनिश्चित कराया। उन्हें नियमित रूप से विद्यालयी परिधान में आने साथ ही विद्यालय की साफ–सफाई आदि के लिए प्रेरित किया गया। इसी क्रम में विद्यालय शिक्षा समिति एवं अभिभावकों की बैठक कर विद्यालय का सौदर्यीकरण शैक्षणिक व्यवस्था में बच्चों को नियमित एवं विद्यालीय परिधान में आने के लिए प्रेरित किया गया। शिक्षकों को प्रतिदिन बच्चों को गृह कार्य देने तथा उसकी नियमित जॉच करने हेतु अनुरोध किया। अभिभावकों को भी बच्चों को नियमित रूप से घर पर पढ़ने हेतु कहने को कहा गया। इसके लिए अभिभावक को बच्चों पर निगरानी रखनें का अनुरोध किया गया। विद्यालय का रंग रोगन कराया गया तथा परिसर को साफ करते हुए प्रतिदिन नियमित साफ–सफाई की व्यवस्था की गई। शौचालय की नियमित सफाई की व्यवस्था कराते हुए बच्चों को उसके साफ–सफाई के प्रति जागरूक किया गया। विद्यालय के टूटे

चाहारदिवारी को ठीक कराते हुए विद्यालय में उग आये झाड़ियों को बच्चों के साथ मिलकर साफ किया गया। विद्यालय शिक्षा समिति की बैठक नियमित रूप से आयोजित करने का कार्य कर अभिभावकों को विद्यालय के प्रति जागरूक किया गया। बागवानी हेतु बच्चों को प्रेरित किया गया। इन क्रियाकलापों से विद्यालय परिसर को आकर्षक बनाने हेतु प्रयास किया गया। विद्यालय में एवं हर वर्गकक्ष में कूड़ेदान की व्यवस्था की गई। विद्यालय में स्वच्छता किट, प्राथमिक उपचार बॉक्स बच्चों के वर्ग कक्ष में बैटने की व्यवस्था, बच्चों को पीने के लिए स्वच्छ पेय जल की व्यवस्था तथा वर्ग 7 एवं 8 के बच्चों के लिए स्मार्ट क्लास की व्यवस्था की गई। विद्यालय के वर्गकक्ष में फर्श की मरम्मत की गई एक कमरे में टाईल्स लगाया गया तथा पंचायत प्रतिनिधियों के सहयोग से परिसर को पेवर ब्लॉक से सुसज्जित किया गया। विद्यालय में लोहे का गेट लगाकर विद्यालय परिसर को सुरक्षित किया गया। वर्ग 1 से वर्ग 5 तक के छात्र/छात्राओं के लिए विभाग द्वारा उपलब्ध कराए गए शिक्षण अधिगम सामग्री से शिक्षण सुनिश्चित किया गया। बच्चों के लिए खेल की सामग्री एवं पुस्तकालय के पुस्तकों का प्रयोग सुनिश्चित किया गया। बच्चों के शैक्षणिक, शारीरिक एवं मानसिक विकास सुनिश्चित करने वाली गतिविधियों पर जोर दिया गया। उनके लिए मासिक मूल्यांकन सुनिश्चित करते हुए उपचारात्मक शिक्षण की व्यवस्था भी की गई। विद्यालय शिक्षा समिति, अभिभावकों, बाल संसद मीना मंच आदि की बैठकें नियमित रूप से आयोजित करते हुए विद्यालय संबंधी निर्णय में उनकी सहभागिता सुनिश्चित की गई। इससे विद्यालय की व्यवस्था बदलने का कार्य किया गया।

3. **विद्यालय में बदलाव हेतु हुए प्रयास का प्रतिफलः**

विद्यालय की तात्कालिक स्थिति में बदलाव हेतु हम लोगों के सामूहिक प्रयास का यह प्रतिफल हुआ कि आज यह विद्यालय न केवल चनपटिया प्रखण्ड के एक आदर्श विद्यालय के रूप में प्रतिष्ठित हुआ है बल्कि जिला द्वारा जारी किए गए जिले के 28 उत्कृष्ट विद्यालयों की सूची में शामिल हुआ है। कल तक जो विद्यालय ग्रामीणों के लिए उपहास का केन्द्र बना रहता था आज उनके लिए कौतूहल एवं आकर्षण का केन्द्र बना हुआ है। विद्यालय के पोषक क्षेत्र के बाहर के भी बच्चे इस विद्यालय में बच्चों के नामांकन के लिए प्रयासरत रहते हैं। आज बच्चों में सीखने का स्तर भी बढ़ा है। विद्यालय में संपदित

साप्ताहिक एवं मासिक गतिविधियों से बच्चों में शैक्षिक स्पर्धा बनी रहती है। बच्चे नियमित एवं गणवेश में टाई, बेल्ट एवं परिचय–पत्र के साथ विद्यालय आते है। विद्यालय में बालमनोविज्ञान आधारित संपादित हो रही गतिविधियॉ एवं शिक्षण अधिगम सामग्री का प्रयोग बच्चों को सीखने हेतु प्रोत्साहित कर रही है। सबसे बड़ा प्रतिफल यह हुआ है कि अपने कार्य के परिणामों को देखकर मन में संतुष्टि हो रही है और बहुत कुछ करने की प्रेरणा भी मिल रही है।

4. **अपने कायानुभव से जिले के अन्य विद्यालयों के लिए सुझावः**

अपने कार्यानुभव के आधार पर मैं जिले के उन प्रधानाध्यापकों को जिनके विद्यालय की स्थिति अच्छी नहीं है बताना चाहॅगा कि आपको अपने विद्यालय की परिस्थिति से चिंतित नहीं होने की आवश्यकता है। मैं आपसे यह कहना चाहूॅगा कि ऐसी परिस्थिति में आपके लिए नवाचार करने के पर्याप्त अवसर है। ऐसे अवसर से आपकी कुछ करने की प्रतिभा सामने आयेगी तथा आप समाज में अपने को साबित कर पायेंगे। मैं यह भी कहना चाहॅगा कि यदि इंसान कुछ करना चाहे तो करने के रास्ते खुद ब खुद सामने आ जाने हैं केवल अपने कार्य एवं व्यवहार में सकारात्मकता लाने की आवश्यकता है। आईए हम प्रण लें कि हम अपने विद्यालय को बदलते हुए हुए ज्ञान, संस्कार एवं सीखने का केन्द्र बनायेंगे। किसी ने सही ही कहा है कि

‘ हम लोग हैं ऐसे दिवाने दुनिया को बदल कर मानेंगे,
मंजिल को पाने आये हैं मंजिल को पा के मानेंगे।’

सधन्यवाद
गोविन्द झा
प्रधानाध्यापक
रा0 उ0 मध्य विद्यालय लखौरा
चनपटिया, प0 चम्पारण

कुछ तस्वीर साक्ष्य स्वरूप

रा.उत्क्रमित मध्य विद्यालय,
प्रखण्ड - चनपटिया
समग्र शिक्षा
सबको शिक्षा अच्छी शिक्षा
रंगाईकी तिथि:-30-5-21
स्थापना वर्ष:- 1966
UMBRELLA

उ.उत्क्रमित मध्य विद्यालय,लखोरा
प्रखण्ड - चनपटिया
समग्र
शिक्षा
सबको शिक्षा अच्छी शिक्षा
स्थापना वर्ष : 1966
रंगाई की तिथि : 30-3-19

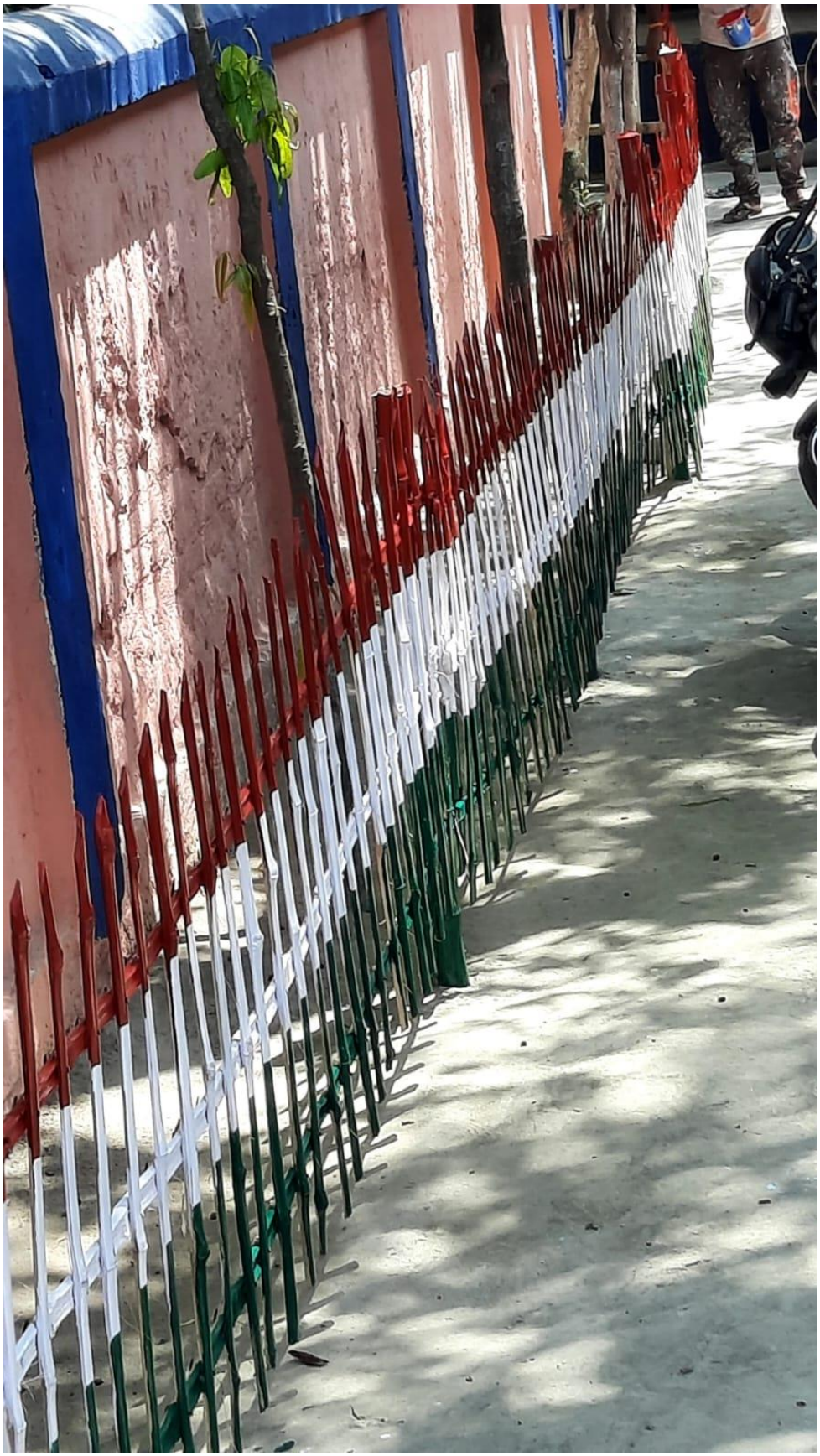

Shot on OnePlus

JAI HIND
JAI HIND

मत पेटी

मोर, चोर
गोरा, बोल
रोना, सोना
औरत, दौलत
कौन, मौन
बौद्ध, फौज
नंदन, चंदन
रंग, संग, जंग
मंगल, शंकर
अतः, प्रातः
स्वतः, नमः
भवः, प्रायः

गुलाब, पुष्प
कुमार, तुम
दुकान, दुल्हन
फूल, धूप
मूल, शूल

Solar System

Solar System